ISSN No. : 2394-0344 REMARKING : VOL-1 * ISSUE-9*February-2015

भारतीय परिप्रेक्ष्य में समाजवाद : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

रश्मि पाण्डेय
सह प्राध्यापक,
समाजशास्त्र विभाग,
अकबरपुर पी0जी0 कालेज,
अकबरपुर, कानपुर देहात

सारांश

समाजवादी विचारधारा ने 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक की किसी भी विचारधारा की अपेक्षा अधिक हलचल उत्पन्न की है, बल्कि 20वीं शताब्दी के राजनीतिक आर्थिक चिन्तन को भी उद्वलित किये हुए रहा। किसी न किसी रूप में यह संसार के करोड़ों व्यक्तियों का एक धर्म–सा रहा है। विश्व के प्रायः सभी विकासशील देशों में किन्हीं न किन्हीं रूपों में समाजवादी सिद्धान्त का बोलबाला पाया जाता रहा है। यों तो समाजवाद की पश्चिमी परिकल्पना आधुनिक युग से प्रारम्भ होती है परन्तु इसके एकाधिक तत्व प्लेटो के विचारों में भी मिलते हैं। प्लेटों के चिन्तन को समाजवादी चिन्तन नहीं कहा जा सकता। फिर अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''रिपब्लिक'' में ''परिवार'' तथा 'सम्पत्ति' का साम्यवादी प्रारूप प्रस्तुत किया है। कुछ भी हो प्लेटो के सिद्धान्त को समाजवादी दर्शन की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

मुख्य शब्द समाजवादी विचारधारा, राष्ट्रीय अर्थतंत्र, सार्वजनिक स्वामित्व

प्रस्तावना

समाजवाद का अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द (Socialism) 'सोशलिज्म' 'सोशियस' से लिया गया है जिसका अर्थ 'समाज' जैसा कि शब्द व्युत्पत्ति से ही स्पष्ट है कि समाजवाद व्यक्तिवाद के नितान्त विरूद्ध समाज को केन्द्रीय मानने वाली और समाज पर आधारित विचारधारा है। समाजवाद का मौलिक उद्देश्य है– समानता की स्थापना करना, अर्थात् पूँजीवाद का स्थान ग्रहण करने वाली समाज व्यवस्था। समाजवाद के अन्तर्गत शोषक वर्गों और मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का उन्मूलन हो जाता है, उत्पाद न के साधनों के निजी स्वामित्व का स्थान सार्वजनिक स्वामित्व ग्रहण कर लेता है, सम्पूर्ण जनता के हित में राष्ट्रीय अर्थतंत्र का नियोजित प्रबन्ध संगठित किया जाता है। समाजवाद प्रत्येक से उसकी योग्यता के अनुसार ''प्रत्येक को उसके कार्य के अनुसार'' के सिद्धान्त को लागू करता है। समाज के सभी सदस्यों की भौतिक और आत्मिक आवश्यकताओं की अधिकतम संभव संतुष्टि होती है। समाजवादी समाज में व्यक्तित्व सम्पत्ति मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोघण का साधन नहीं बन सकती।

18वीं एवं 19वीं सदी के प्रारम्भ में व्यक्तिवादी विचारधारा बहुत लोकप्रिय थी लेकिन अभी 19वीं सदी समाप्त भी नहीं हुई थी कि व्यक्तिवादी व्यवस्था में दरारें दिखाई देन लगी और समाज में वर्ग विभाजन (शोषण एवं शासित वर्ग) दिखाने देने लगा। शोषित वर्ग से यह आवाज उठने लगी कि व्यक्तिवादी प्रवृत्तियों पर राज्य का अंकुश हो और उत्पादन तथा वितरण के साधनों का राष्ट्रीयकरण किया जाय। जनता की इसी माँग की अभिव्यक्ति आधुनिक समाजवाद में हुई जो व्यक्तिवादी सिद्धान्त के विरूद्ध राज्य को एक धनात्मक अच्छाई मानकर उसे अधिक से अधिक कार्य सौंपना चाहता था।

जैसा कि हम जानते हैं कि फ्रांसीसी राज्य क्रान्ति के पश्चात् पश्चिमी यूरोप में स्वतंत्र पूँजीवादी समाज का विकास होने लगा। इस व्यवस्था में श्रमिकों का उत्पीड़न बढ़ा, इसके साथ ही शोषण भी नई व्यवस्था आ गयी। इस उत्पीड़न तथा शोषण के विरोध में विविध समाजवादी विचार जनम लेने गये जैसे समष्टिवाद, अराजकतावाद, ईसाई समाजवाद, श्रमिक संघवाद तथा फेबियन समाजवाद आदि। यहाँ तक कि हिटलर ने भी समाजवाद की हिमायत उग्र जर्मन राष्ट्रीयता के संदर्भ में की थी। अतः समाजवाद की परिभाषा करना कठिन है। समाजवाद सिद्धान्त तथा आन्दोलन दोनों ही रूपों में पाया जाता है। समाजवाद की इतना अधिक लोकप्रियता के कारण ही इसका स्वरूप बहुत अधिक अस्पष्ट हो गया है, अतः पश्चिमी समाजवाद के प्रमुख रूपों को समझने के लिए कार्लमार्क्स को ही आधार माना गया। मार्क्स ने अपने कम्युनिस्ट पार्टी के घोषणा पत्र में तत्कालीन समय में चल रहे समाजवादी आन्दोलन तथा चिन्तन का बहुत ही सटीक विश्लेषण प्रस्तुत किया। मार्क्स के विश्लेषण को ही

आधार मानकर पश्चिमी यूरोप में चल रहे समाजवादी आन्दोलन का वर्गीकरण किया जा सकता है।

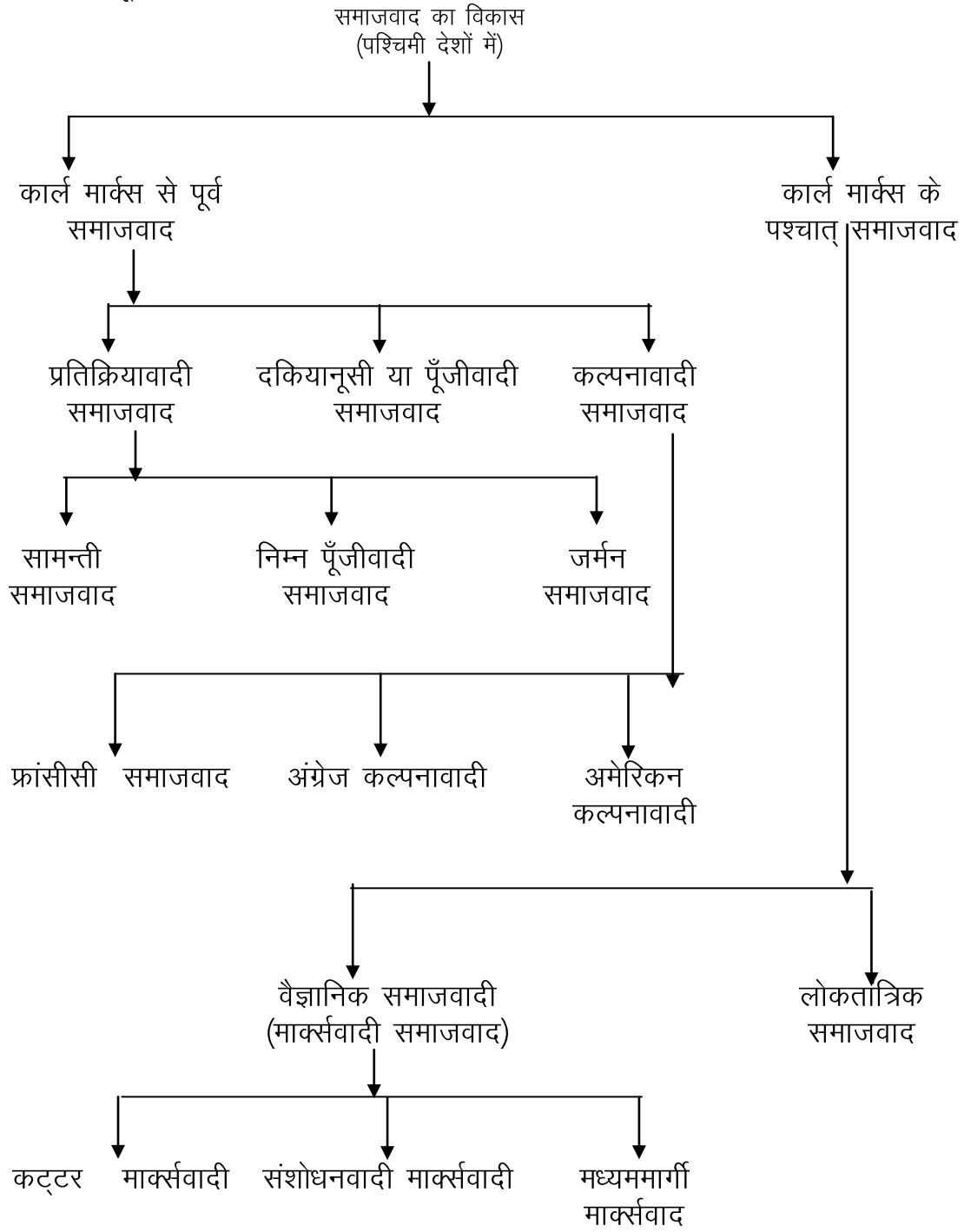

वैज्ञानिक समाजवाद

कार्ल मार्क्स (1818–1883 ई0) के दार्शनिक, राजनीतिक सामाजिक तथा वैज्ञानिक विचारों और सिद्धान्तों ने समस्त संसार में ऐसा तहलका मचा दिया कि उसके कट्टर विरोधियों और शत्रुओं तक को उनके विचारों की शक्ति का लोहा मानने के लिए बाध्य होना पड़ा। वैज्ञानिक समाजवादी विचारधारा के जनक कार्लमार्क्स का जन्म एक सुखी मध्यमवर्गीय यहूदी परिवार में जम्रनी में टीविज नगर में 5 मई 1818 ई0 में हुआ था। उन्होंने 1848 ई0 में ''कम्युनिस्ट घोषणा पत्र'' प्रकाशित किया। कार्लमार्क्स के विचारों पर हीगल का द्वन्द्ववाद, एडम स्मिथ तथा रिकार्डो द्वारा प्रतिपादित व्यक्तिवादी आर्थिक दर्शन एवं फ्रांस के क्रान्तिकारी समाजवादी साहित्य का व्यापक प्रभाव हुआ। हीगल ने अपने दर्शन में विचार तथा विवेक को प्रधानता दी है जबकि मार्क्स इसके ठीक विपरीत भौतिक जगत को महत्व प्रदान करते हैं। अपने दर्शन की स्थापना में मार्क्स ओर एंगेल्स ने हीगेल के 'डायलेक्टिक्स' और फायरबारव के भौतिकवाद का इस्तेमाल किया। इस भौतिकवाद का समीक्षात्मक

पुनर्निर्माण किया इसलिए मार्क्स की पद्धति का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद कहते है।

कार्लमार्क्स से पूर्व फ्रान्स के समाजवादियों ने वर्ग संघर्ष की चर्चा की थी लेकिन माक्स ने अपने ''कम्युनिस्ट पार्टी के घोषणा पत्र में वर्ग संघर्ष के सिद्धान्त की विस्तृत व्याख्या आधुनिक एवं वैज्ञानिक परिवेश में की। घोषणा पत्र का प्रारम्भ ही इस वाक्य से होता है कि ''अभी तक आविर्भूत समस्त समाज का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास रहा।'' वर्ग संघर्ष का सिद्धान्त विश्व इतिहास की व्याख्या के लिए एक अचूक औषधि है, जहाँ फ्रान्स के समाजवादी पूँजीवादी व्यवस्था में सुधार करना चाहते थे, वहाँ पर मार्क्स इस व्यवस्था को वर्ग–संघर्ष के माध्यम से क्रान्ति द्वारा समाप्त करना चाहते हैं। सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के अन्तर्गत वर्ग संघर्ष का अन्त हो जायेगा। मार्क्स के अनुसार सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व एक प्रकार से श्रमिकों के प्रजातंत्र का रूप धारण कर लेगा। अधिनायकत्व का उद्देश्य सभी वर्गों का उन्मूलन कर अपने अन्त के लिए मार्ग प्रशस्त करना होगा। मार्क्स के साम्यवादी समाज का आदर्श होगा– वर्गविहीन तथा राज्यविहीन समाज।

लोकतांत्रिक समाजवाद

लोकतांत्रिक समाजवादी शान्तिपूर्ण साधनों द्वारा ही आर्थिक विषमताओं और असमानताओं को दूर करना चाहते हैं गरीबी, शोषण तथा अत्याचार को मिटाने के लिए हिंसक क्रान्ति करना नहीं चाहते बल्कि जनजागृति एवं शान्तिमय उपायो से उसे समाप्त करना चाहते हैं। ये जिनी सम्पत्ति के विरोधी नहीं है बल्कि चाहते यह है कि निजी सम्पत्ति से उन बातों को दूर कर दिया जाय, जिनसे शोषण, अत्याचार तथा विषमता की खाई–चौड़ी होती जा रही है। व्यक्ति तथा समाज में कहीं विरोध नहीं है। व्यक्ति का विकास समाज से ही संभव है। लोकतांत्रिक समाजवाद की कोई निश्चित परिभाषा नहीं है और न ही इसका कोई जनक है। निःसन्देह यह कहा जा सकता है कि पश्चिमी यूरोप में चल रहे समाजवादी आन्दोलन के विभिन्न रूपों की गहरी छाप भारत के समाजवादी आन्दोलन व चिन्तन पर पड़ी है।

भारत में समाजवादी विचारधारा

भारत में समाजवादी चिन्तन के बीज अति प्राचीन काल से ही पाये जाते हैं। भारत में मनु से लेकर महात्मा गाँधी तक राजनीतिक चिन्तन और विचारधारा की एक अनवरत परम्परा मिलती है। बौद्ध ग्रन्थ, जैन साहित्य, पुराण, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत, कौटिल्यीय अर्थशास्त्र कामन्दक, नीतिसार तथा बृहस्पति आदि के ग्रन्थों में भी समाजवादी चिन्तन के तत्व मूल रूप में दिखाई पड़ते हैं। भारत में समाजवादी चिन्तन पाश्चात्य चिन्तन के समान व्यवस्थित तथा क्रमबद्ध नहीं है लेकिन वस्तुस्थिति यह है कि चिन्तन भी देश और काल की परिस्थितियों से प्रभावित और बहुत कुछ सीमा तक उनका परिणाम होता है। भारत में क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित रूप में समाजवादी चिन्तन का प्रारम्भ 19वीं तथा 20वीं शताब्दी को माना जा सकता है। भारत में समाजवादी चिन्तन पर प्राचीन भारतीय राजशास्त्र के विचारों तथा पश्चिम की विचारधारा की व्यापक प्रभाव हुआ है। समाजवादी आन्दोलन तथा चिन्तनधारा को भारतीय विचारकों ने भारतीय परिस्थितियों, वातावरण तथा चिन्तन के अनुरूप ढालने का प्रयास किया है। भारत में स्वतंत्रता आन्दोलन के समय प्रारम्भिक नेताओं के विचारों को सही मायने में समाजवादी तो नहीं माना जा सकता, परन्तु दादा भाई नौरोजी, गोपालकृष्ण गोखले, फिरोजशाह मेहता, विपिनचन्द्र पाल, लाला लाजपतराय आदि नेताओं के विचारों में ब्रिटिश पूँजीवाद, साम्राज्यशाही की आर्थिक शोषण की नीतियों का विरोध तथा आर्थिक सुधारों के निमित्त उनके द्वारा सुझायी गयी नीतियों में समाजवादी धारणायें विद्यमान थी, परन्तु आधार पाश्चात्य समाजवादी दर्शन नहीं था।

20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही विश्वव्यापी मंदी का दौर प्रारम्भ हो गया। लोग नये तरीके से सोचने को मजबूर हुए। इस मंदी का गहरा प्रभाव भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ा जो थोड़े बहुत उद्योग थे, उनमें छटनी हो रही थी और मजदूरी कम मिलती थी। अकुशल मजदूरों की हालत बहुत ही दयनीय थी। प्राथमिक वस्तुओं की कीमतों में गिरावट ने किसानों की हालत निराशाजनक बना दी। परिणामतः पंजाब, गुजरात, उत्तर प्रदेश में किसान आन्दोलन होने लगे थे। उसी समय दुनिया में नये समाजवादी सोवियत राज्य का उदय हुआ। वहाँ के क्रान्तिकारियों ने लेनिन के नेतृत्व में मार्क्सवाद तथा समाजवाद के नाम पर निरंकुश जारशाही को खत्म कर दिया था। भारत के समाजवादी आन्दोलन का वैचारिक पक्ष विवादास्पद विषय रहा है। भारत के समाजवादी आन्दोलन के नेताओं में विचारों की एकरूपता का अभाव था। आचार्य नरेन्द्र देव और जय प्रकाश नारायण, मार्क्सवादी थे, अशोक मेहता फोबियनवादी, डॉ0 लोहिया गाँधी से प्रभावित और सम्पूर्णानन्द, यूसुफ मेहर अली, क्रान्तिकारी राष्ट्रवादी। मसानी मार्क्सवादी थे लेकिन बाद में टाट्स्की से प्रभावित हो गये। भारत के समाजवादी आन्दोलन की चिन्तनधारा मार्क्सवाद से प्रारम्भ होकर गाँधीवादी धरातल से गुजरते हुए तीसरी दुनिया के लिए नये समाजवादी समाज के निर्माण का प्रयास करती है।

गाँधी से प्रभावित समाजवादी

गाँधी के रचनात्मक कार्यों एवं साधन–साध्य सम्बन्धों का गहरा प्रभाव भारत के समाजवादी आन्दोलन पर हुआ। रचनात्मक कार्यों का एक उद्देश्य जहाँ आर्थिक समानता को प्राप्त करना था, वहीं नैतिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए समाज को तैयार करना भी था। अच्छे साध्य के लिए सही साधन जरूरी है। इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक कदम लक्ष्य की दिशा की ओर हो।

स्वतंत्रता संग्राम के समय महात्मा गाँधी ने सिविल नाफरमानी के रूप में संघर्ष का एक नया अस्त्र निर्मित किया था। नये मनुष्य के निर्माण हेतु नयी तकनीक का इजाद हुआ। गाँधी स प्रभावित भारतीय समाजवादी देश की परम्परागत कुल लक्ष्यों को स्वीकार करते हैं एक है निजी सम्पत्ति की समाप्ति और दूसरा है, वर्ग संघर्ष की अनिवार्यता लेकिन इन दोनों लक्ष्यों में गांधी से प्रभावित समाजवादी अपना भी कुछ जोड़ देते हैं एक तो यह कि जिस आर्थिक इकाई में दूसरे व्यक्ति का श्रम खरीदकर न लगाना पड़े, उसे निजी स्वामित्व के अधीन रहने दिया जाय। यहाँ पर शोषण का सवाल ही पैदा नहीं होगा। इन इकाइयों के अलावा उत्पादन के साधनों पर सामूहिक स्वामित्व होना चाहिए। गांधी का सिविल

नाफरमानी और रचनात्मक कार्यक्रम भारतीय समाजवादियों के लिए वर्ग संघर्ष का एक नया रूप है। गांधी से प्रभावित समाजवाद पूँजीवाद, सर्वहारा के अधिनायकवाद, पश्चिमी प्रजातांत्रिक समाजवाद आदि के अनुभवों से भारत की भौतिक परिस्थितियों में विकसित हुआ है।

निष्कर्ष

अन्त में हम कह सकते हैं कि समाजवादी विचार दर्शन न विदेशी है न स्वदेशी बल्कि इसका स्वरूप पूर्णतः मानवतावादी है जो देशकाल व परिस्थितियों से मुक्त सार्वजनीन शाश्वत है। देश, काल व परिस्थिति के अनुसार समाजवादी दर्शन की व्याख्या बदलती है न कि उसका मौलिक तत्व। भारत में समाजवादी विचार दर्शन का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि क्रान्तिकारी आंदोलन का इतिहास। भारत में समाजवादी आंदोलन के इतिहास का वस्तुगत तथा मनोगत रूप से विश्लेषण करने पर इसके दो स्वरूप मूल रूप में दिखाई पड़ते हैं– प्रथम कोटि गाँधीवाद से प्रभावित समाजवादी तथा द्वितीय कोटि–मार्क्सवाद से प्रभावित कट्टर समाजवादी जो अपना दिशा निर्देशन व विचार 'कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल' से लेते रहे हैं। आज स्वतंत्रता के 66 वर्ष बाद दोनो ही कोटि के समाजवादी दिखायी पड़ते हैं। और दोनों ने ही जन आन्दोलनों के माध्यम से संगठन को चुस्त दुरुस्त बनाने का प्रयास किया। लेकिन इस प्रयास में दोनों ही प्रकार के समाजवादियों को अपेक्षित सफलता नहीं मिल पायी। जहाँ प्रथम कोटि के समाजवादियों ने गाँधीवाद को छोड़ दिया वहीं पर द्वितीय कोटि के समाजवादियों ने मार्क्सवाद से थोड़ा किनारा काट लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि आज भी दोनों प्रकार के समाजवादी अलग–अलग दलों, ग्रुपों व व्यक्ति विशेष के नाम पर बिखरे हैं।

वर्तमान समय में भारत की जनता अनेक बुराइयों का शिकार बनी हुईं। दैनिक उपभोग की वस्तुओं में मिलावट, निजी क्षेत्र के उत्पादकों में इच्छानुसार असीमित लाभ प्राप्त करने की हविश, काला–बाजारी, जमाखोरी, घूसखोरी, पक्षपात, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, बलात्कार, हत्या, अपहरण, डकैती, चोरी, फिरौती आदि प्रवृत्तियाँ समाजवाद की स्थापना के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा बनकर खड़ी है। अतः जब तक ऐसी गंदी प्रवृत्तियों को जड़ समेत नष्ट नहीं किया जायेगा तब तक समाजवाद की स्थापना स्वप्नवत ही रहेगी। ऐसी गंदी व अनैतिक प्रवृत्तियों को केवल गाँधीवादी जीवन दर्शन के माध्यम से ही समाप्त किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. प्रो0 सिनक्लेयर, टी0ए0: ए हिस्ट्री ऑफ ग्रीक पोलिटिकल थॉट, पृ0 144
2. कार्ल मार्क्स एवं एगेल्सः कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणा पत्र, पृ0 63–69
3. मोटवानी, केवल : मनु धर्मशास्त्र, पृष्ठ 150
4. सालेटोर, बी0ए0 : एशियन्ट इण्डियन पोलिटिकल थॉट एण्ड इंस्टीच्युशन, पृ0 50
5. मिसेज राय, एलनः इण्डियन पार्टी पोलिटिक्स–टिरोडिकल ह्यूमेनिस्ट पृष्ठ 356, 357
6. डॉ0 दत्त भूपेन्द्रनाथः अप्रकाशित राजनीतिक इतिहास, पृ0 250
7. डॉ0 अधिकारी, गंगाधरः डाक्यूमेंट्स ऑफ दि हिस्ट्री ऑफ दि कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इण्डिया (भाग–1), पृ0 5
8. डॉ0 कौशिक देवेन्द्र : सेन्ट्रल एशिया इन माडर्न टाइम्स : एफ0 60 एण्ड नं0 724, एल 1–4
9. डॉ0 प्रसाद उपेन्द्र : गाँधीवादी समाजवाद, पृ0 4, 8, 9, 12, 13